# गांधी एक दृष्टि: व्यष्टि समाज एवं प्रौद्योगिकी

डॉ. रजनी दुबे
प्राध्यापक, राजनीति विज्ञान
शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर, उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

सारांश -

*सामाजिकता व्यक्ति की प्रकृति में निहित है, और व्यक्ति की यही सामाजिक प्रवृत्ति उसे मानसिक व भौतिक आवश्यकताओं की तुष्टि के लिए समाज में रहने को उत्प्रेरित करती है। व्यक्ति व समाज दोनों का पृथक अस्तित्व होते हुए भी उसमें अन्योन्याश्रिता के जीवन संबंध देखे जा सकते हैं। समाजिक गठन का मूल आधार संघर्ष व तनाव न होकर सहयोग व सामजस्य है, जहां व्यक्ति स्वातंत्रय की मूलभूत दशा स्व-स्वीकृत नैतिक मर्यादायें है न कि वाह्य नियंत्रण व प्रतिबंध। गांधी इस दृष्टि से सहज नैतिक संबंधों पर आधारित ऐसे समाज की परिकल्पना करते हैं, जो सही दृष्टि से सर्वोदयी समाज हो। गांधी प्रौद्योगिक विकास क्रम को सीधे रूप से सामाजिक-सामुदायिक मूल्यों व आवश्यकताओं की पूर्ति के आधार पर जोड़ना चाहते थे। साथ ही ऐसी प्रौद्योगिकी को अपनाने पर बल देते थे जो एक ओर मानवीय श्रम के गुणों, रचनात्मक प्रतिभा को बनाए रख सके और दूसरी ओर प्रौद्योगिकी व यंत्रों पर व्यक्ति का नियंत्रण स्थापित कर सके।*

**मुख्य शब्द - अनुबंध सिद्धांत, अंतः क्रियात्मक, सर्वोदयी समाज, संप्रभुता, स्वावलंबन,**

## व्यक्ति एवं समाज -

व्यक्ति समाज पर सुरक्षा, स्वास्थ्य, शिक्षा और अन्य सेवायें जो समाज उपलब्ध करवाता है उनके लिए निर्भर रहता है। अच्छे विचारों के आदान-प्रदान एवं अपनी इच्छाओं की पूर्ति के लिए भी वह समाज पर अवलंवित रहता है। समाज स्वयं को, परिवार, समुदाय, संस्था, सरकार, राज्य, समाजिक संगठनों, के स्वरूप एवं वातावरण के माध्यम से अभिव्यक्त करता है। वास्तव में सामाजिकता व्यक्ति की प्रकृति में निहित मानी जा सकती है, और व्यक्ति की यही सामाजिक प्रवृति उसे मानसिक व भौतिक आवश्यकताओं की पुष्टि के लिए समाज में रहने को उत्प्रेरित करती है। व्यक्ति व समाज दोनों का पृथक अस्तित्व होते हुये भी उनमें अन्योन्याश्रित्य के संबंध हैं। गांधी का प्रजातंत्र का विचार है कि सवसे कमजोर व्यक्ति को भी वही समान अवसर प्राप्त हो, जो कि एक सृदृढ़ को है। गांधी की विचारधारा में राज्य नागरिकों के संपूर्ण विकास के लिए है। उसका अस्तित्व नागरिकों के विकास एवं वृद्धि के लिए ही है। यह आवश्यक रूप में मनोवैज्ञानिक-सामाजिक नैतिक एवं आध्यात्मिक है, किंतु इसके आधार के रूप में आर्थिक एवं राजनीतिक सुरक्षा आवश्यक है। समाजवाद एवं साम्यवाद जैसी पद्धतियों के जनता पर अधिक बल दिया एवं व्यक्ति समष्टि के पीछे चला गया। वास्तव में औद्योगीकरण ने आर्थिक शक्ति के केंद्रीकरण जैसे भयंकर परिणामों को जन्म दिया और व्यक्ति को मात्र एक आर्थिक पुर्जा वना दिया। गांधी यह मानते हैं कि जनशक्ति व्यक्तियों से मिलकर बनती है, और पद्धति जनशक्ति

से ही कार्यान्वित होती है, इसलिये उसके केंद्र बिंदु व्यक्ति एवं उसके गुणों की पहचान लोप नहीं होनी चाहिए। इसके लिए गांधी ने एक शक्तिशाली साधन दिया, वह है सत्याग्रह जो प्रत्येक व्यक्ति को अत्याचार के विरुद्ध खड़े होने की शक्ति प्रदान करता है। व्यक्ति की वृद्धि एवं विकास का अर्थ है आत्मा की शक्ति का विकास। आंतरिक शक्ति का विकास शरीरिक एवं भौतिक शक्ति से पृथक है गांधी के लिए प्रत्येक व्यक्ति मुख्य एवं महत्वपूर्ण है। गांधी का विश्वास व्यक्ति के मूलभूत अधिकारों में हैं, स्त्री-पुरुष के समान अधिकारों में है छोटे या बड़े राष्ट्र के समान अधिकारों में हैं। गांधी का यह विचार व्यक्तियों का समाज के प्रति क्या उत्तरदायित्व है इस को जन्म देता है व्यक्ति अपने सामाजिक उत्तरदायित्व के दायरे में अपनी स्वतंत्रता का अनुभव कर सकता है।

1925 में गांधी ने यंग इंडिया में लिखा "It is the narrowncss, Selfishness, Exclusiveness, Which is in bane each wants to profit at the expense of and riseon the ruin of the others" सामाजिक दायित्व और कुछ भी नहीं है केवल मात्र व्यक्तियों के आपसी संबंधों का विस्तार मात्र है, जिसका वृहत् रूप समाज के स्तर पर देखा जा सकता है। व्यक्ति की स्वतंत्रता समाज के मूल्य पर होनी नहीं चाहिए। बल्कि व्यक्ति एवं व्यक्ति स्वतंत्रता समाज के उद्देश्य की प्राप्ति में उपयोगी होने चाहिए। गांधी इस दृष्टि से सहज नैतिक संबंधों पर आधारित ऐसे समाज की परिकल्पना करते हैं जो सही दृष्टि से सर्वोदयी समाज हो ऐसा समाज जहां व्यक्ति सामाजिक हित की कीमत पर व्यक्ति स्वातंत्रय की आकांक्षा न करें, और न समाज व्यक्ति की स्वतः उद्भूत चेतना व विकास के मार्ग में बाधक बने। व्यक्ति व समाज का यह संबंध गांधी ने एक दूसरे से अभिन्न रूप से जुड़ी हुई सागर की लहरों के रूप में देखा जिस प्रकार सागर की एक बूंद सागर से पृथक कर देने पर स्वयं में बूंद है और सागर के जल में मिल जाने पर बूंद व सागर का भेद मिट जाता है व बूंद स्वयं सागर भी कहलाती है, उसी प्रकार व्यक्ति व समाज एक दूसरे में प्रतिविम्बित होते हैं। व्यक्ति व समाज के इस संबंध विवेचन में गांधी के दर्शन का वह आधार प्रतिविंवित होता है, जहां गांधी संपूर्ण विश्व में एकता का दर्शन करते हैं, चाहे वह भौतिक व सामाजिक जगत हो अथवा भौतिक व प्राकृतिक हो। अनुशासन, विकास एवं समर्पण ये तीनों व्यक्ति के विकास के लिए अनिवार्य दशाएं हैं और यही गांधी की व्यक्ति की स्वतंत्रता और विकास की दृष्टि है, जो समाज में संभव है। मानव सम्मान एवं व्यक्तित्व गांधी के लिए प्रथम महत्व का विषय है। व्यक्ति का संपूर्ण विकास स्व अनुशासन एवं निर्भयता के वातावरण में ही संभव है जितनी भी संरचनात्मक इकाइयां हैं चाहे वे सरकारी शासन तंत्र हो अथवा निजी व्यवसाय, व्यक्ति के लिए स्वतंत्र वातावरण का निर्माण करना कठिन कार्य है। यह नौकरी एवं सेवा की दासता है। यह गांधी के अनुसार एक परिष्कृत दासता है। यह गांधी के अनुसार एक परिष्कृत दासता है। गांधी के ये विचार टैगोर की भांति ही है।

"Where the mind is without fear,And the head is held high"

गांधी की व्यक्ति स्वातंत्रय की कुछ आधारभूत दशाये हैं जो स्वयं में मौलिक भी हैं- कि केवल मात्र व्यक्ति दूसरे की स्वतंत्रता में बाधक ही न बने वरन् दूसरों की स्वतंत्रता से आनंद का अनुभव भी करें। 20 वीं सदी का पूर्वार्द्ध भारतीय समाज के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण था, क्योंकि महात्मा गांधी ने समाज को बुराइयों से मुक्त करने का बीड़ा उठाया था। यद्यपि गांधी जी से पूर्व अनेक समाज सुधारक हुए जिन्होंने इस दिशा में

सार्थक पहल भी की लेकिन गांधीजी के प्रयास यर्थाथ पर आधारित होने के कारण उनके विचारों का सकारात्मक प्रभाव पड़ा। उस समय समाज में ऊंच नीच का भेदभाव चरम सीमा पर पहुंच चुका था और कथित तौर पर अपने आप को उच्च जाति का दावा करने वाले लोग निम्न जातियों के लोगों के साथ अस्पृश्यता, शोषण, अन्याय व अत्याचार जैसे अमानवीय व्यवहार कर रहे थे जिससे समाज विखण्डित नजर आ रहा था अतः गांधी जी ने राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाने के लिए समाज सुधार बल पर दिया और कहा कि जब तक समाज में एकता का अभाव रहेगा तब तक हम गुलामी की जंजीरों से मुक्त नहीं हो सकेंगे।

महात्मा गांधी ने आजादी की लड़ाई में राजनैतिक आजादी के साथ-साथ संपूर्ण सामाजिक समता की स्थापना का लक्ष्य भी सामने रखा था। भारत गुलाम क्यों बना? इसके कारणों की खोज करते हुए उन्होंने पाया कि जातिभेद अस्पृश्यता, सामाजिक अन्याय, महिलाओं का गौड़ दर्जा, श्रम को नीच समझना आदि अनेक कारण थे जिनसे हमारा समाज कमजोर बना उनके निराकरण हेतु गांधी ने विभिन्न रचनात्मक कार्यक्रय चलाये जिनमें से एक महत्वपूर्ण कार्यक्रम है अस्पृश्यता निवारण। 1932 में गांधी ने 'हरिजन सेवक संघ' की स्थापना की। गांधी जी द्वारा चलाये गये अस्पृश्यता निवारण और सामाजिक समता की स्थापना के कार्य के पीछे एक अनूठा दर्शन है- प्रायश्रित का। गांधी जी कहा करते थे कि जिनके पुरखों ने अस्पृश्यता चलाने का पाप किया है, उन्हीं को प्रायश्रित के रूप में अस्पृश्यता निवारण का कार्य करना चाहिये। और अछूत माने जाने वाले भाई बहिनों की सेवा कर उन्हें समानता की भूमिका पर लाना चाहिये।

## गांधी और प्रौद्योगिकी -

आधुनिक युग में विकसित हो रही तीन प्रमुख प्रवृत्तियों ने गांधी के प्रौद्योगिकी पर विचारों की प्रासंगिता को स्पष्ट्र किया है। प्रथम - क्या पश्चिम देशों के अर्थविज्ञों एवं प्रौद्योगिक विकास के लिये आधुनिक प्रौद्योगिकी के असीमित प्रयोग ने एक ओर राष्ट्रीय स्त्रोतों के गैर विवेक सम्मत दोहन तथा दूसरी ओर स्वयं मानवीय अस्तित्व पर प्रौद्योगिकी के गैर मानवीय प्रभावों को जन्म नहीं दिया है? साथ ही क्या आर्थिक विकास के लिये प्रौद्योगिकी का असीमित प्रयोग वांछनीय माना जा सकता है? दूसरी - प्रवृत्ति जो परिलक्षित होती है वह पिछले लगभग पांच दशकों में निर्धन राष्ट्रों द्वारा अपनाई गई विकास नीतियों एवं कार्यक्रमों की असफलता के अनुभव में निहित मानी जा सकती है। तीसरी - प्रवृत्ति जिसे कुछ ऐसे माओ व माकर्सवादियों ने उभारने का प्रयास किया है, जो यह मानते है कि मार्क्सवाद व गांधीवाद का समन्वय संभव है। प्रोद्यौगिकी के क्षेत्र में माओं व गांधी की चिन्तन दिशा न्यूनाधिक रूप में समान कही जा सकती है।

गांधी वास्तव में वृहत् अथवा लघु यंत्रों, एक अथवा दूसरे स्वरूप की प्रौद्योगिकी केन्द्रीयकरण अथवा विकेन्द्रीयकरण, उच्च अथवा निम्न तकनीक, हस्त अथवा शक्ति संचालक यंत्र, गांव अथवा नगर जैसे भेदों मे से किसी एक को अपनाने जैसा पूर्ण विकल्प देने का प्रयास नहीं करते। गांधी के विचारों में प्रत्येक वस्तु का एक निश्चित स्थान व कारण माना जा सकता है। वास्तव में गांधी का विकल्प चयन संदर्भात्मक ऐतिहासिक, सामयिक सचेतन और उद्देश्यगत माना जा सकता है, ठीक उसी प्रकार जैसे गांधी की पूर्ण सत्य की आवधारणा सापेक्ष सत्य स्वरूपों को समुचित मान्यता देती है। वर्तमान में प्रचलित ''मानवीय स्वरूप प्रौद्योगिकी''

या ''प्रौद्योगिकी का मानवीयकरण'' जैसे वाक्य अथवा लघु की सुंदरता ''उपयुक्त प्रौद्योगिकी मध्यम स्तरीय प्रौद्योगिकी'' जैसे विचार गांधी की मूल विचार व्यवस्था से उत्पन्न विचार नहीं माने जा सकते। गांधी प्रौद्योगिक विकास क्रम को सीधे रूप में सामाजिक सामुदायिक मूल्यों व आवश्यकताओं की पूर्ति के आधार से जोड़ना चाहते थे। साथ ही ऐसी प्रौद्योगिकी को अपनाने पर बल देते थे। जो एक ओर मानवीय श्रम के गुणों, रचनात्मक प्रतिभा को बनाये रख सके और दूसरी ओर प्रौद्योगिकी व यंत्रों पर व्यक्ति का नियंत्रण स्थापित कर सके। गांधी की स्वदेशी की आवधारणा को भी आर्थिक क्षेत्र में इसी दृष्टि से देखा जाना चाहिये। स्वदेशी का विचार गांधी के लिये मात्र लघु स्तरीय स्वदेशी उद्योगो की विदेशी आर्थिक दुष्प्रभावों से रक्षा करना मात्र नही था। यहां प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण दो शब्दों से जुड़ा है प्रथम विभिन्न राष्ट्रों के मध्य प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण, द्वितीय राष्ट्र की सीमाओं के अंदर प्रौद्योगिकी का हस्तांतरण। आज के विश्व में जो विरोधाभास दिखाई देता हैं, उसमें विभिन्न राष्ट्रों की आर्थिक प्रौद्योगिक स्त्रोतों का विश्व-स्वरूप उभर पाया है। यह स्त्रोत मूलतः कुछ राष्ट्रीय राज्यों के नियंत्रण में देखे जा सकते है और जिनका उपयोग ये राष्ट्र अधिकाधिक आर्थिक लाभ प्राप्ति के लिये करते है। परिणामस्वरूप विभिन्न राष्ट्रों के मध्य न सिर्फ प्रौद्योगिक विकास के भेद देखे जा सकते है बल्कि प्रौद्योगिक हस्तांतरण का उपयोग विकसित राष्ट्रों द्वारा निर्धन राष्ट्रों के शोषण हेतु साधन के रूप में किया जाता है। गांधी विभिन्न राष्ट्रों के मध्य इस प्रकार का आर्थिक व प्रौद्योगिक विकास भेद मिटाना चाहते थे।

राष्ट्रपति महात्मा गांधी के विचारों को यदि देखा जाये तो आजं भी वर्तमान युग में यह पूरी तरह से महत्वपूर्ण है। स्वच्छ भारत की कल्पना ग्रामीण स्तर पर लघु कुटीर उद्योग धंधों का विकास आज के आत्मनिर्भर भारत से बहुत कुछ तारतम्यता रखता है। आज के स्वच्छ भारत अभियान में भी महात्मा गांधी के विचारों को परिलक्षित किया जा सकता है।

**संदर्भ -**


1. R.K. Pranhu: The mind of Mahatma,Navajivan Pub. House New Delhi, 1967 P. 156
2. D.G.Tendulkar : Mahatma Life of M.K.gandhi Vol. V 1938 Abilication Division Ministry of information Govt. of India New Dehli 1969 P. 343
3. Swami Ranjanathananda : Mahatma Gandhi - 100 Years, Bhartiya Vidya Bhawan, New Delhi 1969 P. 325-26
4. J.D.Sethi, Gandhi to day . Vikas Pub. Ltd New Delhi P. 76
5. Harijan, July 28 1946
6. Jagran, Jan.29,2013
7. Hindustan Times Dated 7 May 1962